BHIS-04

Education at your Doorstep

आधुनिक भारत का इतिहास
(1707 से 1950 तक)

दूरस्थ एवं मुक्त अधिगम केन्द्र

EXPERT COMMITTEE

Prof. Talat Ahmad
Patron
Vice-Chancellor,
Jamia Millia Islamia

Prof. Mohammad Miyan
Hony. Chief Advisor, CDOL,
Founder Director, CDOL.

Prof. Iqtedar Mohd. Khan
Department of Islamic Studies,
Jamia Millia Islamia

Dr. Vinod Sethi
University of Delhi

Dr. Kaneez Fatima
Department of Public Administration,
MANNU, Hyderabad

Dr. Sreepati Ramrudu
Director, Centre for Social Exclusion & Inclusive Policy, University of Hyderabad

Dr. Bidhan Chandra Dash
School of Liberal Studies,
Dr. B.R. Ambedkar University, Delhi

Prof. M. Mujtaba Khan
Officer on Special Duty, CDOL.

Mr. Prashant Negi
Hony. Jt. Director, CDOL.

Dr. Arvind Kumar
Hony. Jt. Director, CDOL.

Dr. Farah Naaz
Department of Political Science,
Jamia Millia Islamia

Dr. Salma Iqbal
Shaheed Bhagat Singh College,
University of Delhi

Dr. Naseeb Ahmad
Vice-Principal,
Jamia Sr. Secondary School, Jamia Millia Islamia

PROGRAMME COORDINATOR

Shah Alam Khan, Academic Co-ordinator, CDOL, Jamia Millia Islamia

COURSE WRITERS

Dr Brajesh Kumar Shrivastava, *Assistant Professor, Department of History, Dr Hari Singh Gour Vishwavidyalaya, Sagar (MP)*
Units: (1.1, 1.3-1.4, 1.6, 2.2, 4-6, 7.1-7.4, 9, 11, 12.1-12.3, 12.5-12.11, 13, 16-17)
© Dr Brajesh Kumar Shrivastava, 2017

Sudheer Nath Jha, *Freelance Writer*
Units: (1.2, 1.5, 1.7-1.11, 3.1, 3.4-3.8, 7.6-7.12, 8.1-8.2, 8.4-8.8, 14) © Reserved, 2017

Dr Nirja Sharma, *Guest Lecturer, University of Delhi, Delhi*
Unit: (3.2-3.3) © Dr Nirja Sharma, 2017

Dr Anjali Thapliyal Kaul, *Reader & Head, Department of History, Ginni Devi Modi Girls (PG) College, Modinagar, Ghaziabad*
Units: (7.5, 8.3, 10, 12.4, 15) © Dr Anjali Thapliyal Kaul, 2017

Dr Aruna Sharma, *Reader & Head, Department of History, Ginni Devi Modi Girls (PG) College, Modinagar, Ghaziabad*
Units: (7.5, 8.3, 10, 12.4, 15) © Dr Aruna Sharma, 2017

Rajeev Garg, *Freelance Author*
Unit: (2.1, 2.3-2.8) © Reserved, 2017

All rights reserved. Printed and published on behalf of the CDOL, Jamia Millia Islamia by Vikas® Publishing House, New Delhi

September, 2017

ISBN: 978-93-5259-525-9

All rights reserved. No part of this book may be reproduced in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, ...

उस समय के मुगल शासक मुहम्मद शाह को हर हाल में उनकी की शर्तों को मजबूरन मानना पड़ा व इन दोनों क्षेत्रों को मराठों को सौंपना पड़ा। इसके बाद वे दिल्ली व अवध के बाहर के इलाकों को लूटते थे व कभी–कभी विभिन्न शक्तियों के क्षेत्रों पर धावा बोल देते थे। अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण वे भी उत्तरी भारत में अपनी लोकप्रियता खो रहे थे। उत्तर में सिख, राजपूत व जाट सभी मराठों की उपस्थिति से नाखुश थे। इस राय से बढ़कर उनकी यह लूटपाट की प्रवृत्ति व चौथ और सरदेशमुखी की मांग, और आम जनता की जीविका को क्षति पहुंचाने के कारण वे सभी वर्गों, सम्प्रदायों और धर्मों में अत्यन्त अलोकप्रिय हो रहे थे।

सन् 1759 में पानीपत के निर्णायक युद्ध के तुरंत पहले, वे व्यावहारिक तौर पर एक बड़े क्षेत्र के स्वामी थे, जो बेरार के क्षेत्र से शुरू होकर सतपुरा और विंध्याचल व उससे भी आगे उत्तर में गंगा नदी के तट तक और पश्चिम में पेशावर तक फैला हुआ था। दक्षिण में निजाम उल मुल्क और हैदर अली को छोड़कर व उत्तर में राजपुताना और अवध जो शुजा–ऊद–दौला द्वारा शासित था, को छोड़कर, मध्य क्षेत्र उनके अधिकार में था। सन् 1761 में पानीपत के तृतीय युद्ध में मराठे अहमद शाह अब्दाली से पराजित हो गये। इस घटना से एक महत्वपूर्ण परिवर्तन यह हुआ कि पेशवा की शक्ति क्षीण होकर बिखर गयी व उसके स्थान पर कुछ छोटी शक्तियां उभर कर सामने आई। औरंगजेब के शासनकाल में सिखों एवं जाटों को अनेक कष्ट दिए गए थे। मुगलों से संघर्षों में सिखों व जाटों ने बहुत बलिदान दिया था। इन बलिदानों ने सिखों व जाटों के विद्रोह को लंबे समय तक चलाने के लिए चिंगारी का काम किया।

प्रस्तुत इकाई में मराठा, जाट व सिखों के विद्रोह को विस्तार से बताया गया है।

2.2 मराठा

17वीं शताब्दी में मराठा शक्ति का उत्थान आकस्मिक घटना नहीं थीं। मराठों को संगठित तथा प्रेरित करने वाली शक्तियां शताब्दियों से कार्य कर रही थीं। ग्रांट डफ ने मराठा उत्थान की तुलना सहाद्रि पर्वत श्रेणियों की दावाग्नि से की है जो अचानक लगने के बाद भयंकर रूप धारण कर लेती है लेकिन डफ का अनुमान सत्य नहीं है कि मराठा शक्ति का उत्थान अचानक हुआ था। शताब्दियों से महाराष्ट्र में इस प्रकार की सामाजिक और धार्मिक परंपराएं विकसित हो रही थीं जिन्होंने महाराष्ट्र के राष्ट्रीय संगठन तथा सामाजिक एकता में योगदान दिया था। रानाडे लिखते हैं कि मराठा शक्ति के उत्थान के विश्लेषण के लिए दो प्रश्नों को समझना आवश्यक है। प्रथम, मुसलमानों के शासन को उखाड़ फेंकने के लिए पहला प्रयत्न पश्चिमी भारत में क्यों हुआ? द्वितीय, देश की प्रकृति, देशवासियों के स्वभाव और उनकी संस्थाओं के रूप में कौन–सी परिस्थितियां थीं जिन्होंने इस प्रयत्न का साथ दिया और सफलता में योग दिया।